

DATE / /

प्रश्न - अरस्तु का विरचन सिद्धांत :-

उत्तर ! → अरस्तु से बहुत पहले प्रसिद्ध दार्शनिक लैली ने काव्य और कला का विवेचन किया था। लैली के मत में समस्त मानवीय चेतना पर अंधशक्ति का आरोपन काव्य और कला के माध्यम से होता है। अंधशक्ति का सीधा अर्थ है - वे समस्त अनुभूतियाँ जो कवि या कलाकार के हृदय में विराजमान होती हैं, और जिनमें चेतना को किसी दृढ़ तक सम्मोहित कर लेने की शक्ति निहित होती है।

अरस्तु के काव्य कला चिंतन का सबसे महत्वपूर्ण संदर्भ यह है कि वे मानव मन के अवस्थाओं को संदे वृत्तियों के अभाव या फिर भावातिरेक का परिणाम मानती हैं। काव्य और कला मानव हृदय में समानान्तर भावनाओं का उद्गार करती हैं। इस तरह मनुष्य के आंतरिक अभाव इतने होते हैं जो कुछ अंश तक उनके भीतर फलते रहते हैं। इस प्रकार काव्य एवं कला के माध्यम से मानव चेतना में निरसंचित समस्त कुण्डली का परिचय होता है जैसे- कठना, दुःख, संताप आदि।

इसी क्रम में इस महान दार्शनिक ने विरचन सिद्धान्त की परिभाषा दी है - " करुणा और त्रास के आवेग से मानवीय वृत्तियों का तनाव क्रमशः शिथिल होता हुआ इतना हो जाता है, तापश्चात् अत्मा में सामरस्य की धानु-दायिनी स्थिति उत्पन्न होती है। त्रासदी और संगीत के माध्यम से उत्पन्न इस क्रिया को विरचन किया कहा जाता है। "

अरस्तु ने अपने राजनीति शास्त्र में यह कहा है:-  
 - त्रासदी को तब ही संगीत के माध्यम से भी  
 आत्मा के भीतर निहित भावों के समरूप्य  
 की सम्भावना पर विचार किया जा सकता  
 है। अनेक धार्मिक तथा आध्यात्मिक संदर्भ  
 ऐसे हैं, जिनमें प्रार्थना की लक्ष्य पर  
 विभिन्न विरंचन राग चेतना में रहस्यमय  
 आर्कषण उत्पन्न करते हैं। यह क्रिया अत्यंत  
 गोपनीय होती है; और इसके द्वारा कल्प  
 एवं त्रास का बमन एवं विरंचन होता  
 है।"।

1857 ई० में जेकाब बर्नेट ने  
 अरस्तु के विरंचन सिद्धांत को सर्वप्रथम  
 शास्त्रीय व्याख्या प्रस्तुत की। जिस प्रकार -  
 "नाना औषधियों का प्रभाव शरीर पर पड़ता  
 है, उसी प्रकार विरंचन चेतना के साथ  
 परतों के भीतर विरंचन की सूक्ष्म प्रक्रिया  
 चलती रहती है।" किसी भी काल या कला  
 का त्रासद पक्ष प्रमुख के भीतर सीधा  
 असर डालता है। इससे भीतर द्विप इंद्र  
 कल्पना नैराश्रय भय और त्रास के भाव  
 क्रमशः उत्थान की स्थिति को प्रकट  
 होते हैं। इस गहन मानसिक क्रिया में  
 आनन्द की अनुभूति भी होती है। और  
 जिन दुःखमय दृश्यों को भोगा, पाठक को  
 प्रत्येक अपने भीतर अनुभूत करता है, उनसे  
 उत्पन्न भावना आर्कषण बनकर मन को  
 ऊपरी स्तर पर आती है, और इससे उस  
 मानव विशेष का निजी दुःख वैशक हर्षणा  
 के लिए इतना ही लेकिन थोड़े समय  
 के लिए शान्त अवश्य ही आता है।  
 ऐसा इसलिये होता है, ताकि जीवन  
 फिर से सामान्य गति से चल सके,  
 और दुःखों के आर्कषण में डूब कर  
 नहीं रह जाय बल्कि अपेक्षाकृत चतुरमन ही रहे।